CHAPTER-VII

MEMBERS BLOSSOM

(DISCLAIMER: AIACE neither takes responsibility of Originality and veracity of contributions nor subscribe to the theme and views of the contributors)

नमिता सेनगुप्ता
पत्नी, स्व. के आर सेनगुप्ता
सदस्य संख्या-A-20109

जल संरक्षण

जल से ही सृष्टि का उद्भव
प्रकृति को दे समृद्धि वैभव
बिना इसके जीवन विपन्न
जलसंकट में है आज विश्व

जलाशय को पाट बना बहुतल
प्रकृति का ध्वंस हो रहा केवल
हरितिमा विहीन भू आवरण
वर्षा जल से वंचित है भूतल

पेड़ कट कट कर हुए शेष
वनों में है ठूंठों का अवशेष
थम गया वर्षा का परिगमन
गढ़ रहे हो विनाश का परिवेश

खो गई पनघट की मीठी बोली
जल के विवाद में चलती गोली
कहीं अतीत के पृष्ठों में न रह जाए
जलाभाव में भूलें रंगों की होली

पिपासित धरा हो रही आकुल
जल विहीन है उसका अंतर तल
बूँद बूँद संग्रहित करना सीखो
जल संरक्षण से मिलेगा प्रतिफल

प्रत्यूषा (भोर)

धीरे धीरे हुआ निशि अवसान,
पुरातन दिन ने किया प्रस्थान।
उन्नयन लिए होगा आशा का पथ,
प्रभाती करे प्रत्यूषा का आव्हान।

प्राची में सूर्य प्रभा के खुले द्वार,
प्रभात किरण पुंज का हुआ प्रसार।
ऊषा आगम आह्लादित हर कोर,
नवसृजन का होगा अब नवाचार।

रश्मि कलश छलक छलक छलके,
लाल सुनहरे रंग क्षितिज के।
प्रकृति का कण कण प्रकाश मय,
स्वर्णिम रथ आया पूरब से।

सप्त सुरों में तरंगिनी गाये भैरवी,
नव प्रभात अभिनंदन में बाजे तुरही।
साल वन्य में पर्ण दे रहे ताल,
भोर की प्रतीक्षा में जागे विभावरी।

मलय वातास ने छेड़ी सुरमयी वेणु,
पुष्पों ने बिखेरी मकरंद रेणु।
विहग वृंद सुरों में गाये रागिनी,
खूँटे से बँधी रंभाती धेनु।

भोर का स्पर्श मन वीणा में झंकार,
झर झर झरे भू पे हरश्रृंगार।पल्लवित तुषार बिंदु से करे आचमन,
शंख नाद में गूँज स्वर ओंकार।

बिजय किशोर प्रसाद सिन्हा

सदस्य सख्यां 1490, **बेरमो**, **बोकारो**,

झारखण्ड

सुविधा सुरक्षा और सम्मान पर एआईएसीई का एक अवलोकन

कठिन डगर थी ,कठिन सफर था
ना कोई ईच्छा, ना भविष्य था
आशा और निराशा के बीच
बीत रहे थे कोल ईण्डिया अधिकारियों के दिन

उदित हुआ, एआईएसीई,
जब पूरे कोल छितिज पर
अधिकारियों का बना वो सम्बल,
जगाया भरोसा और विश्वास

चुन चुन कर हर एक कांटे,
राहें कर दी सभी आसान
नये नये पद सृजित करवा कर,
कालबद्ध प्रोन्नत करवाया

चिकित्सा सुविधा बढ़ाई सभी की,
विधवा पेन्शन आसान किया
पारिवारिक मित्रता हेतु, कोल कल्ब निर्माण किया
राहें की आसान पेंशन पुनरीक्षण की

कोयला उत्पादन पर सेस दिलवाया
एआईएसीई बन गई अब, एक नई सशक्त पहचान,
छूटे नही कोई अब, असुरक्षित कोयला अधिकारी परिवार
हर वक्त हर समय, हर मोर्चे पर

साथ खड़ा है एआईएसीई
आपके सपने, सुविधा, सुरक्षा और सम्मान की खातिर
सदा लड़ा रहा है एआईएसीई
करे भरोसा आप भी, होगी उम्मीदें साकार
छोटे - बड़े हर पद का सम्मान एआईएसीई ने बढाया है,
कार्यरत हो या हो सेवानिवृत्त ,
हर अधिकारी और उनके परिवार को सम्मान दिलाया है।
किया कोयला अधिकारियों का कल्याण

हर वो वाजिब सुविधा दिलाया है
सुरक्षा की एआईएसीई बनी,
एक नयी सशक्त पहचान।
अधिकारियो के मनोबल को

दिया एक अभूतपूर्व सम्मान।
सेवा, सुविधा सुरक्षा सम्मान की,
अब एक ही पहचान , हमारा प्यारा एआईएसीई महान
एआईएसीई जिन्दाबाद